Krishi Kumbh
Online E-Magazine
Www.KrishiKumbh.Com

कृषि कुंभ

E-ISSN: 2582-9769

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 05 भाग 05, (अक्टूबर, 2025)
पृष्ठ संख्या 61–62

चना की वैज्ञानिक खेती

सुनील कुमार[1], डॉ0 प्रमोद कुमार सिंह[2] एवं डॉ0 नन्दन सिंह[3]

[1]विषय वस्तु विशेषज्ञ (बीज प्रौद्योगिकी),
[2]विषय वस्तु विशेषज्ञ (फसल सुरक्षा),
[3]विषय वस्तु विशेषज्ञ (मृदा विज्ञान),
कृषि विज्ञान केंद्र बहराइच–द्वितीय
आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज अयोध्या, उत्तर प्रदेश, भारत।

Email Id: sksunilkamal5350@gmail.com

हमारे देश में दलहनी फसलों में चने की फसल का पहला स्थान है। चने की फसल उगाने से भूमि की उपजाऊ शक्ति बनी रहती है, क्योंकि इसके पौधों की जडों में वायुमंडल की नाइट्रोजन को एकत्र करने वाले जीवाणु पाए जाते हैं। चने में औसतन 21 प्रोटीन पाए जाते हैं। चने से दाल, नमकीन तथा अनेक प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं। सब्जी के रूप में छोला अति लोकप्रिय है। इसकी पत्तियों को साग के रूप में प्रयोग किया जाता है।

क्षेत्रफल तथा उत्पादन–

चने की खेती मध्यप्रदेश में अधिक की जाती है। उत्तर प्रदेश में बांदा, हमीरपुर, झांसी, चित्रकूट, जालौन, इलाहाबाद, कानपुर आदि चना उत्पादन के अग्रणी जिले है।

जलवायु–

चने की खेती के लिए शुष्क तथा ठंडी जलवायु आवश्यक होती है लेकिन फलियों एवं दानों के विकास के लिए तापमान सामान्य होना चाहिए। पाला से फसल का नुकसान होता है। कम वर्षा वाले क्षेत्र चने की खेती के लिए उपयुक्त होते हैं।

मिट्टी–

चना की खेती लगभग सभी प्रकार की खेती में की जा सकती है किन्तु उचित निकास वाली दोमट या भारी दोमट तथा परमा व मार भूमियां इसकी खेती के लिए उपयुक्त होती है।

खेती की तैयारी–

चने की खेती के लिए ज्यादा खेत की तैयारी की आवश्यकता नहीं पडती है। बल्कि ढेलेदार मिट्टी जिससे जड़ क्षेत्र में वायु संचार अच्छा रहता है इसकी बढवार के लिए उपयुक्त होती है। खेत की एक जुताई मिट्टी पलट हल से तथा एक से दो जुताईयां देसी हल या कल्टिवेटर करने के बाद खेत में पाटा लगाकर खेत को समतल कर देना चाहिए।

खाद तथा उर्वरक–

जीवाणुओं द्वारा भूमि में नाइट्रोजन स्थिरीकरण बढाने के लिए बीज को बोने से पहले विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित कर लेना चाहिए। इसकी खेती के लिए सामान्यतः 15–20 किग्रा नाइट्रोजन, 40–50 किग्रा फास्फोरस तथा 20 किग्रा गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से कूंड में बोते समय देना चाहिए।

उन्नतिशील प्रजातियां–

समय से बुवाई के लिए अवरोधी , राधे तथा आधार एवं देर से बुवाई के लिए उदय, पूसा–372 तथा पंत जी 186 प्रजातियां उपयुक्त होली है जबकि काबुली चने की उन्नतिशील प्रजातियों में पूसा 1003– शुभ्रा, उज्ज्वल एवं चमत्कार प्रमुख है।

बुवाई का समय–

चने की बुवाई हेतु अक्टूबर का दूसरा पखवाड़ा सबसे उपयुक्त होता है। सिचाई की सुविधा उपलब्ध होने पर बुवाई नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक की जा सकती है।

बीज की मात्रा–

चने की छोटी व सामान्य दाने वाली प्रजातियों के लिए 75–100 किग्रा प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दाने एवं काबुली चने की प्रजातियों के लिए 90–100 किग्रा हेक्टेयर बीज की आवश्यकता होती है।

बीज उपचार–

चने की फसल में बीज शोधन हेतु दो ग्राम थीरम के साथ 1 ग्राम कार्बोन्डाजिम का मिश्रण प्रति किग्रा बीज की दर प्रयोग करते हैं। इसके पश्चात बीज के चने के विशिष्ट राइजोबियम कल्चर से उपचारित करना चाहिए। इसके लिए एक पैकट (200 ग्राम) कल्चर 10 किग्रा बीज के लिए पर्याप्त होता है। राइजोबियम कल्चर का साफ पानी में घोल बना कर 10 किग्रा बीज की दर बीज के ऊपर छिड़क कर हल्के हाथ से मिलाना चाहिए, जिससे बीज के ऊपर सामान्य हल्की परत बन जाए। उपचारित बीज को पक्के फर्श या पालीथीन शीट पतली परत के रूप में 2–3 घंटे तक फैलाने के बाद बोना चाहिए। उपचारित बीज को तेज धूप मे सुखाना चाहिए।

बोने की विधि–

चने की बुवाई पंक्ति में करनी चाहिए। असिंचित क्षेत्रों में पंक्तियों की दूरी 30 सेमी तथा सिंचित क्षेत्रों में 45 सेमी रखनी चाहिए। बुवाई देसी हल या सीड डिल से करते हैं।

सिंचाई तथा जल निकासी–

चने में पहली सिंचाई बुवाई के 45 से 60 दिन बाद (फूल आने से पहले) तथा सिंचाई फलियों में दाना बनते समय करना चाहिए। यदि जाड़े शीतकालीन वर्षा हो जाए तो दूसरी सिचाई की आवश्यकता नहीं पडती है। चने में फूल आने के समय सिचाई नहीं करनी चाहिए। खेत से उचित पानी निकालने का प्रबंध होना चाहिए।

खरपतवार नियंत्रण–

बीज बोने के 20–25 दिन पर खड़े खरपतवारो को खुरपी एक निराई कर निकाल देना चाहिए। खरपतवारो के रासायनिक नियंत्रण के लिए खेत में फसल बोने के 24 से 48 घंटे पूर्व फ्लूक्लोरेलिन (बासालिन) रसायन की 2.2 लीटर मात्रा को 800–1000 लीटर पानी में घोल बना कर स्प्रेयर से एक समान छिडकाव कर देना चाहिए। इसके पश्चात खेत को एक समान बखर से या कल्टिवेटर से दवा को खेत में अच्छी प्रकार से मिला देना चाहिए।

खुटाई या शीर्ष कर्तन–

फसल की 15–20 सेमी ऊचांई होने पर उसके शीर्ष भाग को दो–तीन पत्तियों सहित तोड़ देते हैं। जिससे पौधों में शाखाएँ अधिक निकलती है। और फूल एवं फलियां अधिक बनती है।

फसल सुरक्षा–

कीट नियंत्रण – चने की फसल को अनेक कीट हानि पहुचाते है। इनमें कटुआ, सेमी लूपर तथा फलीबेधक प्रमुख है। कटुआ कीट की सूड़िया रात में पौधों को जमीन की सतह से काट देती है और सेमी लूपर की हरे रंग की सूड़िया पत्तियों, कलियों, फूलों एवं फलियों को नुकसान पहुंचाती है। चने की फलीबेधक कीट की सूड़िया फलियों को छेदकर दानों को खा जाती है। उपरोक्त कीटों के नियंत्रण लिए गर्मी की जुताई एवं समय से बुवाई करना चाहिए तथा 50– 60 बड़े पर्चर प्रति हेक्टेयर खेत में लगाना चाहिए। कीटों का अधिक प्रकोप होने पर क्विनालफास 25 ईसी रसायन की 2 लीटर मात्रा को 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिडकाव कर देना चाहिए।

रोग नियंत्रण–

चने की फसल में मुख्य रूप से जड़ सड़न एवं उकठा नामक रोग लगते हैं। जड़ सड़न प्रायः पौधे की प्रारंभिक अवस्था में लगता है और पौधे सूख जाते हैं। जबकि उकठा रोग फसल की किसी भी अवस्था में लग सकता है। उकठा रोग से पूरा पौधा पीला पड़ कर सूख जाता है। जड़ सड़न रोग के नियंत्रण के लिए फसल को अक्टूबर के स्थान पर नवम्बर में बुवाई करनी चाहिए।

जबकि उकठा रोग के नियंत्रण के लिए बीज को देर से बुवाई करना चाहिए। खेत की गर्मी की जुताई करने से और उस खेत में 3–4 वर्ष तक चने की फसल न बोने रोगकारी जीव मर जाते हैं और उकठा का प्रभाव काफी कम हो जाता है।